Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
VOL- IX | ISSUE- I | JANUARY | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

जनसंख्या वृद्धि और बदलता भूमि उपयोग जोधपुर नगर के सन्दर्भ में

डॉ. सुनील कुमार
अधिष्ठाता कला विभाग
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

सोहन लाल
शोधार्थी, विभाग
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

प्रस्तावना

जोधपुर नगर की बसाव स्थिति का चतुर्दिक भूदृश्य बहुस्वरूपी है तथा इसका नगर के उद्भव एवं विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जोधपुर भारत के महान् मरूस्थल की पूर्वी सीमा पर स्थित एक महत्वपूर्ण एवं सुन्दर नगर है। इसके पश्चिम में विस्तृत बालुका स्तूप युक्त मैदान, उत्तर में शेखावाटी का अर्द्धशुष्क क्षेत्र, दक्षिण में गोडवाड़ (ळवकूंत) प्रदेश का उपजाऊ लूनी नदी का बेसिन तथा पूर्वी सीमा पर स्थित अरावली पीडमाण्ट विविध धरातलीय स्वरूप, उत्पादों एवं सांस्कृतिक लक्षणों वाले प्राकृतिक प्रदेश हैं। उक्त चार महत्वपूर्ण प्राकृतिक प्रदेशों के केन्द्र में स्थित नगर जोधपुर के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

जोधपुर नगर राज्य के सभी प्रमुख कस्बों, नगरों एवं प्रादेशिक केन्द्रो से सड़क, रेल एवं वायु मार्गों द्वारा जुड़ा हुआ है। यह राजय राजमार्गों द्वारा उत्तर में स्थित नागोर, बीकानेर, गंगागनर, पश्चिम में जैसलमेर, पूर्व में ब्यावर, अजमेर एवं जयपुर, दक्षिण—पूर्व में पाली, उदयपुर, दक्षिण—पश्चिम में बाड़मेर से जुड़ा हुआ है (चित्र १.१)। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या १४ जोधपुर से हाकर गुजरता है, जो नगर को अहमदाबाद एवं दिल्ली से मिलाता है। प्रादेशिक एवं स्थानीय सड़क मार्ग इसे पश्चिमी राजस्थान में स्थित छोटे—छोटे बाजार केन्द्रों एवं हाटों से जोड़ते हैं।

नगर देश के अनेक महानगरों से रेल मार्गों द्वारा तुड़ा हुआ है। यह उत्तर—पश्चिम रेल मार्ग का मुख्यालय वं पश्चिमी राजस्थान का एक महत्वपूर्ण रेलवे जंक्शन है। जोधपुर से उत्तर—पश्चिम रेलवे २४ से भी अधिक अप एं डाउन रेलें प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जोधपुर को लखनऊ, दिल्ली, अहमदाबाद, बम्बई, आगरा, हावड़ा, चण्डीगढ़ तथा मारवाड़ जंक्शन होते हुए उदयपुर एवं अजमेर से मिलती है। इतना ही नहीं जोधपुर नगर उत्तर की ओर बीकानेर, गंगानगर तथा पश्चिम की ओर जैसलमेर एवं दक्षिण—पश्चिम में बाड़मेर से रेलों द्वारा जुड़ा हुआ है।

ऐतिहासिक नगर जोधपुर वायु सेवा दिल्ली, मुम्बई, उदयपुर एवं जयपुर से प्रतिदिन दो आने एवे जाने वाली उड़ानों द्वारा गम्य है।

अत: जोधपुर नगर अपनी महत्वपूर्ण स्थिति के साथ, ऐतिहासिक उत्कृष्टता, सुगम्यता, विस्तृत बाजार एवं वाणिज्य समबन्धों के कारण निकट भविष्य में एक विशाल क्षेत्र का प्रमुख व्यापार केन्द्र बन जायेगा। यह अपने प्रभाव प्रदेश के समस्त संसाधनों का उपभोक्ता एवं सेवा कार्य करता है। नगर जोधपुर आज मात्र प्रशासनिक दृष्टि से ही नहीं अपितु विस्तृत बाजार, वाणिज्य, कला एवं संस्कृति, शिक्षा एवं शोध क्षेत्र में अधिक प्रगति के कारण पश्चिमी राजस्थान की प्रादेशिक राजधानी है।

प्रस्तावित शोध के सोपान

जोधपुर नगर का उद्गीव मुख्यत: उत्तर मध्य युग (मुस्लिम—युग) में १३ मई १४५९ को

राठौड़ राव जोधा जी के द्वारा धरातल से ४०० फीट या १२२ मीटर ऊँची सपाट शीर्ष वाली दुर्गम पहाड़ी पर मेहरानगढ़ दुर्ग की स्थापना के साथ मारवाड़ की राजधानी नगर के रूप में हुआ है। इससे पूर्व मारवाड़ की राजधानी वर्तमान जोधपुर नगर के उत्तर–पूर्व में ८ किलोमीटर की दूरी पर स्थित मण्डोर थी। प्राचीन राजधानी के प्रति असुरक्षा एवं नवीन ढंग से प्रशासनिक व्यवस्था की भावना से प्रेरित होकर राव जोधा जी ने जिस मेहरानगढ़ दुर्ग की स्थापना की उसी के निचले ढालन पर जल बिन्दुओं के निकट नगर एक छोटे शहरपना के रूप में बसा और फूलता फैलता रहा है[२]।

नगर या नगरों के विकास में उनके बसाव स्थान की भौतिक दशाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं। जोधपुर नगर अपनी स्थापना (१४५९ ई.) के पश्चात् एक शताब्दी से भी अधिक काल तक संकेन्द्रीय रूप में मेहरानगढ़ दुर्ग धारण करने वाली सुरक्षा की दृष्टि से उच्च पहाड़ी के दक्षिण–पश्चिम, दक्षिणी एंव दक्षिणी–पूर्व ढालानों के निकटवर्ती उर्मिल मैदान पर विकसित होता रहा। नगर जोधपुर का प्रारम्भिक विकास केन्द्रोन्मुखी शक्तियों का प्रतिफल है। नगर का केन्द्र बिन्दु मेहरानगढ़ दुर्ग रहा और उसी के निकट उर्मिल मैदान पर प्रशासनिक, धार्मिक, वाणिज्यिक एवं व्यावसायिक, रिहाइशी आदि गतिविधियों का मिश्रित रूप में जमाव हुआ। तत्पश्चात् काल क्रमानुसार इस सुरक्षित स्थान पर व्यवसायिक गतिविधियों एवं जनसंख्या वृद्धि के फलस्वरूप नगर अपने केन्द्र बिन्दु से बसाव स्थान के भौतिक स्वरूप के अनुकूल विकसित होता रहा। नगर जोधपुर अपने विकास क्रम में सांस्कृतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक आदि अनके घटनाएं संजोए हुए है। उन्हीं घटनाओं के आधार पर नगर के ऐतिहासिक विकास को निम्न काल खण्डों में विभाजित किया जा सकता है।

प्रस्तावित शोध का महत्व

नगर क्षेत्र में धरातलीय विषमता का प्रभाव भी जनसंख्या वितरण पर पूर्णरूपेण परिलक्षित है। जनसंख्या सामान्य रूप से उत्तर एवं उत्तर–पश्चिम के पहाड़ी एवं उच्च पथरीले ऊँचे–नीचे धरातल वाले भाग से दक्षिण, दक्षिण–पूर्व एवं दक्षिण–पश्चिम के सामान्य ढालू उर्मिल मैदान की ओर बढ़ती जाती है। परकोटाबद्ध नगरीय भाग अधिक जनसंख्या एवं सघन बसाव, भीड़–भाड़ व खुले क्षेत्रों के अभाव के परिणामस्वरूप मानव–चीटियों का पिरामिड या टीला सदृश्य प्रतीत होता है। परकोटा के चतुर्दिक निकटस्थ वार्डों में जनसंख्या वितरण मध्यम एवं अपेक्षाकृत समान है, परन्तु परकोटा से बाहर दूर के सभी वार्डो, जो बड़े आकार के हैं, में जनसंख्या छितरी एवं असमान रूप में वितरित है। इन वृहद आकार वाले वार्डों में कम एवं बिखरी हुई जनसंख्या का मूल कारण कम घनत्व नहीं है अपितु इस का मुख्य कारण वार्डों का पिछड़ापन एवं कुछ वार्डों का धरातल पहाड़ी ऊँचा–नीचा एवं खादानों युक्त तथा कुछ का धरातल सैन्य स्थलों एवं औद्योगिक गतिविधियों से घिरा होना है।

जनघनत्व जनसंख्या वितरण का सापेक्ष एवं गुणात्मक रूप है। नगर क्षेत्र में जनसंख्या अध्ययन में जन घनत्व के प्रतिरूपों एवं गत्यात्मकता पर विशेष रूप से बल देना आवश्यक समझा गया है[५]। नगर जोधपुर का औसत घनत्व ७८०८ व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर या ४४.३२ व्यक्ति प्रति एकड़ है। राज्य के अन्य नगरों यथा जयपुर (३५१४), अजमेर (२६१८), उदयपुर (४९७६) एवं कोटा (२७०५) की तुलना में यह फिर भी अधिक उच्च नहीं है। इसका कारण जोधपुर नगर निगम क्षेत्र का अधिक फैलाव होना है। जनसंख्या घनत्व प्रतिरूप का गहन अध्ययन भिन्न स्थिति का संकेत देता है। परकोटाबद्ध नगरीय क्षेत्र में

४८०६० व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर में निवास करते है। इस नगरीय भाग के कुछ वार्डो का घनत्व ५१००६ व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर भी है, जो नगर जोधपुर के औसत घनत्व से ६ गुना अधिक है। परकोटा से बाहर के नगरीय क्षेत्र का औसत घनत्व ६२७४ व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। परकोटा के निकटस्थ एवं दूर के वार्डो में उनके धरातलीय स्वरूप, रोजगार केन्द्रों की अवस्थिति, गमनागमन स्वास्थ्य एवं चिकित्सा, जल आपूर्ति आदि सुविधाओं में भिन्नता के फलस्वरूप जन घनत्व में पर्याप्त विषमता मिलती है जोधपुर नगर में सबसे कम या निम्न घनत्व (६२५७ व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर) वार्ड संख्या ५८ में एवं सबसे अधिक ५१००६ व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर वार्ड संख्या ३४ में है।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

जीविका के सन्दर्भ में जनसंख्या का वर्गीकरण मुख्यत: जीवनयापन के स्रोत के रूप में विविध आर्थिक गतिविधियों के सापेक्ष महत्व को प्रदर्शित करता है। १९७१ एवं पूर्व के दशकों के जनगणना प्रतिवेदनों में व्यवसाय की नौ श्रेणियों को प्रस्तावित किया गया था, परन्तु पश्चात् के सभी जनगणना प्रतिवेदनों में समस्त व्यवसायिक गतिविधियों को प्रमुख चार श्रेणियों — १. कृषि,२. कृषक मजदूर,३. घरेलू उद्योग, ४. अन्य कार्य तक सीमित किया गया है। नगरों के सन्दीं में जहां प्रथम दो श्रेणियाँ अनावश्यक हैं, वहीं पश्चात् की दो श्रेणियां तथ्य विलेषण योग्य किसी सारगर्भित निष्कर्ष तक पहुँचने में सहायक नहीं है। वास्तव में चतुर्थ श्रेणी (अन्य कार्य), जिसमें सभी प्रमुख नगरीय गतिविधियाँ सम्मिलित है, अधिक उपयोगी है। अत: प्रस्तुत अध्ययन में पूर्व दशक के जनगणना प्रतिवेदनों में प्रस्तावित अन्य कार्य श्रेणी के आधार पर नगर जोधपर की कुल जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना का अर्थपूर्ण विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

जनगणना प्रतिवेदन २००१ के अनुसार नगर जोधपुर की कुल २४५७२४ कार्यकारी जनसंख्या की ९२.५८ प्रतिशत या २२७४७० मुख्य या प्रधान कार्यकारी एवं ७.४२ प्रतिशत सीमान्त कार्यकारी जनसंख्या है। प्रधान कार्यकारी जनसंख्या की २२ प्रतिशत परकोटा के अन्दर एवं शेष ७८ प्रतिशत परकोटा नगर के बाह्य नगरीय क्षेत्र में रहती है। प्रधान कार्यकारी जनसंख्या का लगभग १ प्रतिशत भाग कृषि, कृषि मजदूरी एवं कृषि से सम्बन्धित अन्य कार्यों में संलग्न तथा ४.४६ प्रतिशत भाग घरेलू उद्योगों (Household inudstries) में कार्यरत है। सर्वाधिक ८७.३० प्रतिशत मुख्य कार्यकारी जनसंख्या की सहभागिता अन्य क्रिया कलापों यथा पशुपालन, खनिज खनन, वन कार्य, बागवानी, विपणन, वाणिज्य एवं व्यवसाय, भण्डारण, यातायात एवं संचार, औद्योगिक गतिविधियों, सरकारी एवं अद्वसरकारी सेवा कार्य आदि से संलग्न है (तालिका ३. ३ए)। घरेलू उद्योंगो में कार्यरत जनसंख्या का प्रतिशत परकोटाबद्ध नगर एवं उसके बाहर निकटवर्ती क्षेत्रों में अधिक है। इसका मूल कारण ये लघु श्रेणी के उद्योग अधिकाशत: परकोटा के अन्दर या उसके आस—पास क्षेत्र में ही स्थित है। इनमें कार्य करने वाले स्थानीय लोग ही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Report on the administration of Marwar State Vo. XXVII 1910-11 and XXVIII, 1911&12, PP.36,40
2. Report on the administration of Marwar State XLII, 1929-30, P.31
3. Draft Master plan for Jodhpur, Town Planning orgnisation of Rajasthan, Jaipur 1976-96
4. Tod. J. :The Travels in Western India, Hindi Translation by G.N.Bohra, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. P. 54
5. Roy.B.C.:Memoirs of the geological survey of India, Vol.86, The economic geol ogy and mineral resources of Rajasthan and Ajmer, Maneger of Publications New Delhi, 1959,P.18